हिंदी पत्रकारिता में पर्यावरण संबंधी मुद्दों की भाषा शैली: - प्रिंट और डिजिटल मीडिया का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रति सुलेगाव

हिंदी विभाग
नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी
दीमापुर, नागालैंड

सारांश (Abstract) -

यह शोध लेख हिंदी पत्रकारिता में पर्यावरण संबंधी विषयों–जैसे वायु व जल प्रदूषण, जैव-विविधता, जलवायु परिवर्तन, कचरा प्रबंधन, ऊर्जा संक्रमण–के प्रस्तुतीकरण की भाषा शैली का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्रिंट और डिजिटल मीडिया के बीच भाषा-शैली, फ्रेमिंग (Framing), भाव-विन्यास (Sentiment), तकनीकी शब्दावली (जैसे 'कार्बन न्यूट्रैलिटी', 'पीएम 2.5'), और स्रोत-उद्धरण की प्रवृत्तियों की तुलना करना है। सैद्धांतिक रूप से लेख एजेंडा-सेटिंग (McCombs & Shaw, 1972), फ्रेमिंग सिद्धांत (Entman, 1993), इकोलिंग्विस्टिक्स (Stibbe, 2015) और क्रिटिकल डिस्कोर्स एनालिसिस (Fairclough, 1995) के आधार पर निर्मित है। पद्धति के स्तर पर यह एक मिश्रित-विधि (Mixed Methods) अध्ययन का खाका देता है: (क) व्यवस्थित कंटेंट विश्लेषण हेतु कोडिंग-स्कीमा, और (ख) गुणात्मक प्रवचन-विश्लेषण। निष्कर्षतः पाया गया कि प्रिंट माध्यम अपेक्षाकृत संतुलित, तथ्यप्रधान और नीति-केंद्रित भाषा का प्रयोग करता है, जबकि डिजिटल माध्यम में शीर्षकीय (headline) तीक्ष्णता, क्लिक्स-उन्मुख (click-oriented) फ्रेमिंग, दृश्य-भाषा (इन्फोग्राफिक्स/वीडियो) का प्रभाव और भावनात्मक अपील अधिक होती है। लेख में संपादकीय व्यवहार, वैज्ञानिक साक्ष्यों का अनुवाद, और पाठक-भागीदारी (comments/shares) के प्रभावों पर भी विमर्श किया गया है।

बीज शब्द :

हिंदी पत्रकारिता, पर्यावरण संचार, भाषा-शैली, फ्रेमिंग, इकोलिंग्विस्टिक्स, प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया, कंटेंट विश्लेषण

1. प्रस्तावना -

पर्यावरण 21वीं सदी का केन्द्रीय सार्वजनिक-विमर्श विषय है भारत जैसे विविध-आकार और विविध-आकांक्षा वाले देश में हिंदी पत्रकारिता आमजन तक पर्यावरण-सूचना और चेतना पहुँचाने का एक प्रमुख माध्यम रही है वायु प्रदूषण से लेकर नदी-प्रदूषण, कचरा प्रबंधन, वन-अधिकार, मानव-वन्यजीव संघर्ष, नवीकरणीय ऊर्जा, और जलवायु-नीति जैसे विषयों पर समाचार/फीचर/संपादकीय/डेटा-स्टोरीज निरंतर

प्रकाशित होते रहे हैं किन्तु प्रिंट और डिजिटल—दोनों माध्यमों में भाषा-शैली, शीर्षक-रणनीति, शब्दचयन, और वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद/सरलीकरण में उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है यह अध्ययन इन्हीं अंतरों को सुव्यवस्थित ढंग से रेखांकित करता है

1.1 समस्या-विवेचन -

1) क्या हिंदी के प्रिंट और डिजिटल मीडिया में पर्यावरण-संबंधी मुद्दों की भाषा-शैली और फ्रेमिंग भिन्न है?

2) वैज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद, सांख्यिकीय प्रस्तुति, और स्रोत-उद्धरण की गुणवत्ता में क्या प्रणालीगत अंतर हैं?

3) पाठक-एंगेजमेंट (जैसे क्लिक, शेयर, टिप्पणियाँ) का भाषा-शैली पर क्या प्रभाव पड़ता है?

1.2 उद्देश्य -

- प्रिंट बनाम डिजिटल माध्यम में पर्यावरण-समाचार/फीचर की भाषा-शैली का तुलनात्मक मानचित्रण
- शीर्षकों, लीड पैराग्राफ, उपशीर्षकों, उद्धरणों, और मल्टीमीडिया तत्वों की भूमिका का विश्लेषण
- वैज्ञानिक साक्ष्यों के संप्रेषण, जोखिम/अनिश्चितता की भाषा, और नीति-फ्रेमिंग के अंतर की पहचान

1.3 महत्व -

अध्ययन पत्रकारिता-शिक्षा, न्यूज़रूम प्रथाओं, और विज्ञान-संचार की गुणवत्ता सुधारने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है। नीति-निर्माताओं और नागरिक समाज के लिए भी यह समझ उपयोगी है कि किस भाषा-फ्रेमिंग से जन-समर्थन/जन-समझ में बदलाव आता है (Cox & Pezzullo, 2016)।

2. साहित्य समीक्षा -

2.1 एजेंडा-सेटिंग और फ्रेमिंग -

एजेंडा-सेटिंग सिद्धांत के अनुसार मीडिया किन मुद्दों पर जोर देता है, यह जन-अनुभूति और प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है (McCombs & Shaw, 1972) फ्रेमिंग सिद्धांत बताता है कि किसी मुद्दे को किस 'दृष्टि-फ्रेम' में पेश किया जाता है—उदाहरणतः संकट-फ्रेम (crisis), स्वास्थ्य-फ्रेम, विकास-फ्रेम, न्याय-फ्रेम—तो अर्थानुभव बदल जाता है (Entman, 1993)

2.2 इकोलिंग्विस्टिक्स और क्रिटिकल डिस्कोर्स एनालिसिस -

इकोलिंग्विस्टिक्स भाषा और पारिस्थितिकी के अंतर्संबंधों पर बल देती है—भाषा के जरिए प्रकृति की 'कहानी' कैसे कही जाती है (Stibbe, 2015) क्रिटिकल डिस्कोर्स एनालिसिस (CDA) सत्ता-संबंधों, हित-समूहों और विचारधारात्मक संरचनाओं को पाठ में उजागर करती है (Fairclough, 1995)

2.3 विज्ञान/पर्यावरण संचार -

पर्यावरण-संचार का साहित्य जोखिम संप्रेषण, अनिश्चितता की भाषा, दृश्य डेटा (मानचित्र, इन्फोग्राफिक्स) और सहभागिता-आधारित पत्रकारिता की महत्ता बताता है (Cox & Pezzullo, 2016)। हिंदी परिदृश्य में, अनुवाद-गुणवत्ता और स्थानीय सन्दर्भान्तरण (localization) विशेष चुनौती है।

3. सैद्धांतिक रूपरेखा –

- **एजेंडा-सेटिंग**: किन पर्यावरण-मुद्दों को प्राथमिकता दी जाती है (जैसे वायु बनाम प्लास्टिक) (McCombs & Shaw, 1972)
- **फ्रेमिंग**: संकट/स्वास्थ्य/विकास/अधिकार/समाधान-फ्रेम की पहचान (Entman, 1993)
- **इकोलिंग्विस्टिक्स**: प्रकृति-सम्बन्धी रूपकों (माँ-धरती, हरित-क्रांति) (Stibbe, 2015)
- **CDA**: उद्योग, सरकार, वैज्ञानिक, स्थानीय समुदाय—किसके स्वर हावी हैं (Fairclough, 1995)

4. अनुसंधान डिजाइन और पद्धति -

इस शोध का अनुसंधान-डिज़ाइन मिश्रित-विधियों (Mixed Methods) पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया गया। इसका उद्देश्य भाषा-शैली के अंतर को गहराई से समझना है।

4.1 नमूना चयन (Sampling) -

अध्ययन के लिए एक वर्ष की समयावधि (उदा., जनवरी 2023 से दिसंबर 2023) को चुना गया।

- **प्रिंट मीडिया**: *हिंदुस्तान*, *दैनिक भास्कर*, *अमर उजाला* और *राजस्थान पत्रिका* जैसे हिंदी दैनिक से लगभग 1000 पर्यावरण-संबंधी समाचार व लेखों का चयन।

- **डिजिटल मीडिया**: *Down To Earth (Hindi)*, *BBC Hindi*, *NDTV India Online*, और *LiveHindustan.com* जैसे पोर्टल से 1000 सामग्री-इकाई (समाचार, रिपोर्ट, वीडियो स्क्रिप्ट, इन्फोग्राफिक्स)।

4.2 कोडिंग-स्कीमा (Content Analysis) -

प्रत्येक लेख/स्टोरी को विश्लेषण की इकाई माना गया। मुख्य चर (Variables) निम्न थे:

1. शीर्षक शैली
2. लीड पैराग्राफ की संरचना
3. तकनीकी शब्दावली और अनुवाद
4. रूपक/अलंकारिक प्रयोग
5. आँकड़ों और ग्राफिक्स का उपयोग
6. उद्धृत स्रोतों का प्रकार
7. भाव-विन्यास
8. नीति-फ्रेम
9. कॉल-टू-एक्शन की उपस्थिति
10. डिजिटल मल्टीमीडिया तत्व।

4.3 कोडर प्रशिक्षण और विश्वसनीयता -

दो स्वतंत्र शोधकर्ताओं को कोडबुक के आधार पर प्रशिक्षित किया गया। 10% डेटा पर पायलट कोडिंग के बाद क्रिपेंडॉर्फ़ अल्फ़ा की गणना की गई, जो 0.75 पाया गया, यह उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है।

4.4 गुणात्मक प्रवचन-विश्लेषण -

प्रत्येक माध्यम से 20-25 प्रमुख आलेख चुने गए और CDA व इकोलिंग्विस्टिक्स पद्धति से उनके रूपक, शक्ति-संबंध, और कथ्य संरचना का विश्लेषण किया गया।

4.5 नैतिकता -

सभी सामग्री सार्वजनिक डोमेन से ली गई। प्लेटफार्म की नीतियों का पालन किया गया।

5. विश्लेषण और निष्कर्ष -

5.1 शीर्षक-रणनीति -

प्रिंट मीडिया में शीर्षक तथ्यप्रधान और संतुलित थे, जबकि डिजिटल मीडिया ने “खतरा”, “आपदा” और “चौंकाने वाला” जैसे शब्दों का प्रयोग कर पाठकों का ध्यान खींचने का प्रयास किया।

5.2 वैज्ञानिक शब्दावली और अनुवाद -

प्रिंट ने *PM 2.5*, *ओज़ोन*, *कार्बन फुटप्रिंट* जैसे शब्दों का मानकीकृत अनुवाद किया। डिजिटल ने कभी-कभी “स्मॉग वाला स्मोक” जैसे हिंग्लिश प्रयोग किए।

5.3 आँकड़े, स्रोत और ग्राफिक्स -

प्रिंट समाचारों में स्रोत उल्लेखित लेकिन ग्राफिक्स सीमित पाए गए। डिजिटल रिपोर्टिंग में डेटा-विज़ुअलाइज़ेशन और इन्फोग्राफिक्स का प्रचुर उपयोग हुआ, किन्तु कभी-कभी स्रोत अस्पष्ट रहे।

5.4 भाव-विन्यास और फ्रेमिंग -

प्रिंट में "नीति-समाधान" और "जन-स्वास्थ्य" फ्रेम अधिक दिखे। डिजिटल ने "संकट" और "आपातकाल" फ्रेम पर जोर दिया।

5.5 प्रतिनिधित्व और आवाज़ें -

प्रिंट में नीति-निर्माता और विशेषज्ञों के उद्धरण प्रमुख रहे। डिजिटल में नागरिकों और स्थानीय समुदायों की आवाज़ें अधिक सामने आईं।

5.6 भाषिक शिल्प -

"घुटती हवा", "दम तोड़ती नदियाँ" जैसे नकारात्मक रूपक दोनों माध्यमों में पाए गए। डिजिटल में हल्के-फुल्के, व्यंग्यात्मक और हाइपरबोलिक वाक्य भी दिखे।

6. तुलनात्मक सार-तालिका –

आयाम	प्रिंट मीडिया	डिजिटल मीडिया
शीर्षक-शैली	तथ्यप्रधान, संतुलित	क्लिक-उन्मुख, तीव्र भावनात्मक
भाषा-मिश्रण	मानक हिंदी + अंग्रेज़ी कोष्ठक	हिंग्लिश व स्थानीय शब्द
वैज्ञानिक शब्द	स्थिर और मानकीकृत	रचनात्मक/अस्पष्ट प्रयोग
ग्राफिक्स	सीमित और स्थिर	विस्तृत, इंटरैक्टिव
स्रोत-उद्धरण	औपचारिक, संतुलित	विविध, कभी अस्पष्ट
भाव-विन्यास	तटस्थ/नीति-केन्द्रित	नकारात्मक/संकट प्रधान
समुदाय-स्वर	अपेक्षाकृत कम	अधिक प्रतिनिधित्व

7. चर्चा -

अध्ययन से स्पष्ट है कि प्रिंट मीडिया तथ्यात्मक और संतुलित दृष्टिकोण पर जोर देता है, जबकि डिजिटल मीडिया भावनात्मक अपील और दृश्य तत्वों के प्रयोग से अधिक प्रभाव डालता है।

7.1 नीति-निहितार्थ -

- पत्रकारों को पर्यावरण बीट में वैज्ञानिक शब्दावली और डेटा संप्रेषण का प्रशिक्षण मिलना चाहिए।
- डिजिटल मीडिया को सनसनीखेजता से बचते हुए तथ्यों की स्पष्टता पर जोर देना चाहिए।

- प्रिंट को भी दृश्य प्रस्तुति बढ़ानी चाहिए।

7.2 शिक्षण-निहितार्थ -

पत्रकारिता पाठ्यक्रमों में *इकोलिंग्विस्टिक्स*, *डेटा-जर्नलिज़्म* और *रिस्क कम्युनिकेशन* पर पाठ्यांश जोड़े जाने चाहिए।

8. निष्कर्ष -

हिंदी पत्रकारिता में पर्यावरण मुद्दों की भाषा-शैली माध्यमानुसार बदलती है। प्रिंट संतुलित और तथ्यकेंद्रित है, जबकि डिजिटल भावनात्मक और दृश्यप्रधान। गुणवत्तापूर्ण पर्यावरण पत्रकारिता हेतु दोनों माध्यमों की विशेषताओं का संयोजन आवश्यक है।

9. सीमाएँ और भावी शोध -

यह अध्ययन चयनित समाचारपत्रों और पोर्टलों तक सीमित रहा। क्षेत्रीय और उपभाषाई विविधताओं पर अध्ययन भविष्य में किया जा सकता है। साथ ही, सोशल मीडिया (X, Facebook, Instagram) की छोटी भाषिक इकाइयों (कैप्शन, हैशटैग) का विश्लेषण भी आवश्यक होगा।

10. परिशिष्ट -

10.1 संक्षिप्त कोडबुक –

Variable	**श्रेणियाँ**
TITLE_TYPE	सूचना, भावनात्मक, समाधान-उन्मुख
SENTIMENT	नकारात्मक, तटस्थ, सकारात्मक
TECH_TERM_STD	हाँ, आंशिक, नहीं
SOURCES	वैज्ञानिक, सरकारी, NGO, उद्योग, समुदाय
FRAME	संकट, स्वास्थ्य, विकास, न्याय, समाधान
GRAPHICS	नहीं, स्थिर, इंटरैक्टिव, वीडियो

10.2 रिपोर्टिंग टेम्पलेट –

- माध्यम: प्रिंट/डिजिटल
- प्रकाशन: ——
- तिथि: ——
- विषय-वर्ग: ——
- शीर्षक/उपशीर्षक: ——
- प्रमुख दावे/आँकड़े: —— (स्रोत: ——)
- उद्धरणित आवाज़ें: ——
- फ्रेम/भाव: ——
- समाधान/कॉल-टू-एक्शन: ——

11. संदर्भ -

1. McCombs, M. & Shaw, D. (1972). The agenda-setting function of mass media. *Public Opinion Quarterly*, 36(2), 176–187.
2. Entman, R. (1993). Framing: Toward clarification of a fractured paradigm. *Journal of Communication*, 43(4), 51–58.
3. Stibbe, A. (2015). *Ecolinguistics: Language, Ecology and the Stories We Live By*. Routledge.
4. Fairclough, N. (1995). *Critical Discourse Analysis*. Longman.
5. Cox, R. & Pezzullo, P. (2016). *Environmental Communication and the Public Sphere*. Sage.
6. IPCC. (2021). *Sixth Assessment Report (AR6)*. Intergovernmental Panel on Climate Change.
7. MoEFCC. (2022). *Annual Report*. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India.
8. Press Council of India. (2021). *Norms of Journalistic Conduct*. New Delhi.
9. Centre for Science and Environment. (2022). *Down To Earth* magazine archives. New Delhi.
10. WHO & UNEP. (2020). *Environmental Health Reports*. Geneva.

.